

वदिशों में अध्ययनरत भारतीय छात्रों की सुरक्षा

यह एडिटोरियल 07/03/2022 को 'द हट्टू' में प्रकाशित "A Safety Net for Students Abroad" लेख पर आधारित है। इसमें वदिशों में अध्ययनरत भारतीय छात्रों की सुरक्षा संबंधी आवश्यकता के बारे में चर्चा की गई है।

संदर्भ

भारतीय छात्रों का अध्ययन के लिये वदिश जाना कोई नई परघटना नहीं है। भारत में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा संस्थानों की कमी और मांग-आपूर्ति अंतराल के कारण लंबे समय से कई भारतीय परिवार अपने बच्चों को अध्ययन हेतु वदिश भेजने के लिये विवश होते रहे हैं। लेकिन हाल की दो घटनाओं कोवडि-19 महामारी और यूक्रेन पर रूस के आक्रमण ने वदिशों में अध्ययनरत ऐसे छात्रों को विशेष रूप से सुखियों में ला दिया है। जब तक भारत में शिक्षा प्रणाली छात्रों की आवश्यकताओं के अनुरूप नहीं बनेगी, उनका वदिश जाना जारी रहेगा। भारतीय संस्थानों को प्रौद्योगिकी, चिकित्सा और अन्य विषयों सहित व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के लिये छात्रों के समक्ष अधिकाधिक विकल्प प्रस्तुत करने की आवश्यकता है।

वर्तमान परिदृश्य

- वर्तमान में 7,70,000 भारतीय छात्र वदिशों में अध्ययनरत हैं, जो वर्ष 2016 में 4,40,000 छात्रों की तुलना में 20% वृद्धि को इंगित करता है। दूसरी ओर वदिशों में शिक्षा की मांग की तुलना में घरेलू क्षेत्र में वृद्धि केवल 3% रही है।
- वश्व में अंतरराष्ट्रीय छात्रों के मामले में चीन के बाद भारत दूसरा सबसे बड़ा स्रोत है। महामारी की शुरुआत से पहले वदिशों में अध्ययनरत भारतीय छात्र वदिशी अर्थव्यवस्थाओं में 24 बिलियन डॉलर का व्यय कर रहे थे, जो कि भारत के सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 1% है।
 - वर्ष 2024 तक वदिशों में अध्ययनरत भारतीय छात्रों की संख्या बढ़कर लगभग 1.8 मिलियन हो जाने का अनुमान है जब भारतीय छात्र भारत से बाहर लगभग 80 बिलियन डॉलर खर्च कर रहे होंगे।
- मेडिकल की डिग्री हासिल करने के लिये भारतीय छात्र लगभग तीन दशकों से रूस, चीन, यूक्रेन, किरगिस्तान, कज़ाखस्तान और फिलीपींस का रुख करते रहे हैं।
- भारत की पूर्व वदिश मंत्री सुषमा स्वराज ने वदिशों में रहने वाले भारतीयों को देश का 'ब्रांड एंबेसडर' पुकारा था। भारत और ब्रिटेन के प्रधानमंत्री ने ब्रिटेन में रह रहे भारतीयों को दोनों देशों के बीच का 'living Bridge' या 'जीवंत सेतु' कहा था।
 - भारतीय प्रवासियों (Indian Diaspora) का वृहत लाभ 'सॉफ्ट पावर', 'ज्ञान हस्तांतरण' (Knowledge Transfer) और भारत आने वाले धन विप्रेषण (Remittances) के रूप में प्राप्त होता है।

शिक्षा के लिये वदिश पलायन के मुख्य कारण

- जहाँ भारत की आधी से अधिक आबादी 25 वर्ष से कम आयु की है और दुनिया के शीर्ष 100 में कोई भी भारतीय विश्वविद्यालय शामिल नहीं है, ऐसे में स्वाभाविक है कि महत्त्वाकांक्षी छात्र शिक्षा हेतु वदिश का रुख करेंगे।
- मेडिकल डिग्री के विशेष संदर्भ में भारत के नज्दी मेडिकल कॉलेजों में एमबीबीएस सीट के लिये भुगतान की तुलना में वदिशों में रहने और शिक्षण शुल्क पर होने वाला खर्च कहीं अधिक वदनीय है।
- भारत में उपलब्ध एमबीबीएस सीटों की तुलना में एमबीबीएस उम्मीदवारों की संख्या अधिक है। **राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग (NMC)** के आँकड़ों के अनुसार, वर्ष 2021-22 में देश में कुल 596 मेडिकल कॉलेज थे, जहाँ एमबीबीएस सीटों की संख्या 88,120 थी।

छात्रों के समक्ष हाल में उत्पन्न हुआ संकट

- वर्तमान में जारी रूस-यूक्रेन संघर्ष में यूक्रेन में अध्ययनरत दो भारतीय छात्रों की दुर्भाग्यपूर्ण मौत के मामले सामने आए हैं, जिनमें एक गोलाबारी का शिकार हुआ जबकि दूसरा हृदयाघात से अपनी जान गँवा बैठा।
 - यद्यपि बाह्य सशस्त्र आक्रमण के बीच यूक्रेन में अराजकता की स्थिति है, यह परिदृश्य गंभीर हस्तक्षेप की आवश्यकता रखता है।

- अनुमान है कललगभग 20,000 भारतीय छात्र यूक्रेन में फँसे हुए थे ।
- हाल ही में कनाडा में तीन कॉलेजों के अचानक बंद हो जाने से लगभग 2,000 अंतरराष्ट्रीय छात्र (जनिमें मुख्य रूप से भारतीय छात्र शामिल थे) प्रभावित हुए हैं ।
- आरोपों के अनुसार अब दवालिया घोषित हो चुके इन कॉलेजों ने शक्तिषण शुल्क के रूप में छात्रों से लाखों रुपए प्राप्त कयि थे और अब इन छात्रों का भवषिय खतरे में पड़ गया है ।
- महामारी के दौरान ऐसी ही एक घटना सामने आई थी जब ऑस्ट्रेलिया ने अपने कॉलेज परसिरों में अध्ययन हेतु नामांकित हजारों भारतीय छात्रों के लयि अपनी सीमाएँ बंद कर दी थी ।

आगे की राह

- **मेजबान देशों की भूमिका:** वदिशों में अध्ययनरत भारतीय छात्र उन देशों में न केवल उच्च शक्तिषा के उपभोक्ता हैं, बल्कि उनके मेहमान भी हैं । इस दृष्टिकोण से भारत के लयि यह स्वाभाविक ही होगा कविह वदिशों में भारतीयों की सुरक्षा हेतु मेजबान देशों द्वारा इसका उत्तरदायित्व ग्रहण करना सुनिश्चित कराए ।
- **अंतरराष्ट्रीय संधियों के माध्यम से सुरक्षा जाल:** भारत सरकार को अंतरराष्ट्रीय छात्रों के लयि तत्परता से एक सुरक्षा जाल या 'सेफटी नेट' तैयार करना चाहिये । संकट और आकस्मिकताओं के समय भारतीय छात्रों के कल्याण को सुनिश्चित करने हेतु मेजबान देशों को बाध्य करने वाले अंतरराष्ट्रीय समझौतों को सर्वोपरि महत्त्व दिया जाना चाहिये ।
 - वर्तमान में यूके और ऑस्ट्रेलिया के साथ चल रही व्यापार समझौता वार्ताएँ एक बड़ा अवसर प्रदान करती हैं कवि भारत इस दृष्टिकोण से भी आगे बढ़े ।
- **छात्र बीमा योजनाएँ:** लोकप्रिय धारणा के वपिरीत वदिशों में अध्ययनरत छात्रों का एक बड़ा भाग समृद्ध परिवारों से संबंधित नहीं होता और वे प्रायः अपनी शक्तिषा के वतितपोषण के लयि महँगे ऋण का सहारा लेते हैं ।
 - बेहतर अवसर और भवषिय को सुरक्षित करने की आकांक्षा उन्हें कठनाइयों की ओर धकेल सकती है ।
 - वदिशी सरकार के साथ समझौतों में एक अनविर्य छात्र बीमा योजना के साथ-साथ वदिशों में छात्रों के कल्याण का उत्तरदायित्व मेजबान देश को सौपने जैसी शर्तें शामिल की जानी चाहिये ताकवि मेजबान देश में उल्लेखनीय राशिव्यय करने वाले इन छात्रों के हितों की रक्षा की जा सके ।
- **सरकारी मेडिकल कॉलेजों की संख्या में वृद्धि करना:** यदपिहुँच और उपलब्धता सुनिश्चित की जा सके तो सरकारी मेडिकल कॉलेजों की संख्या में वृद्धि करना देश के लयि लाभप्रद होगा ।
 - केवल नजिी उद्यम का सहारा लेने से यह संभव नहीं होगा, बल्कि राज्य और केंद्र सरकार जलिा मुख्यालय अस्पतालों का उपयोग कर, आधारभूत संरचना का वसितार कर और अधिक मेडिकल कॉलेजों (नीति आयोग की अनुशंसा के अनुरूप) की स्थापना कर सकती हैं ।
 - इस प्रकार, नमिन एवं मध्यम सामाजिक-आर्थिक स्तर के वे छात्र भी लाभान्वति होंगे जो अन्यथा मेडिकल सीटों तक पहुँच नहीं बना पाते हैं ।
- **उच्च शक्तिषा में अधिक नविश:** भारत में उच्च शक्तिषा के स्तर को ऊपर ले जाने के लयि उच्च शक्तिषा, वशिष रूप से अनुसंधान और विकास में नविश बढ़ाने की तत्काल आवश्यकता है ।
 - उच्च गुणवत्तापूर्ण अवसंरचना एवं नवाचार पारतित्तर के नरिमाण के लयि प्रमुख शैक्षणिक संस्थानों को वतित प्रदान करने हेतु उच्च शक्तिषा वतितपोषण एजेंसी (Higher Education Finance Agency- HEFA) का गठन एक स्वागतयोग्य कदम है ।
 - इसके साथ ही, वदिशी विश्वविद्यालयों को भारत में परसिर स्थापित करने की अनुमतदिने से भारत की उच्च शक्तिषा प्रणाली में वदिशी धन का प्रवाह बढ़ेगा और भारत से 'प्रतभिा के पलायन' या 'ब्रेन ड्रेन' (Brain Drain) में कमी आएगी ।

अभ्यास प्रश्न: देश के अंदर उच्च शक्तिषा प्राप्त में भारतीय छात्रों के समक्ष वदिद्यमान प्रमुख चुनौतियों की चर्चा कीजयि और उन कदमों से संबंधित सुझाव दीजयि जो भारत में उच्च शक्तिषा के लयि एक बेहतर पारतित्तर के विकास हेतु उठाए जा सकते हैं ।